मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

कविता से जन-जागरण का काम यदि किसी ने सबसे अधिक सफलता के साथ किया तो गुप्त जी ने। वस्तुतः गुप्त जी राष्ट्रकवि 'भारत-भारती' के कारण हुए। इससे खड़ी बोली काव्य की प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व सहयोग दिया।

गुप्त जी व्यापक संवेदना के रचनाकार हैं। उन्होंने अपने युग के भावबोध को समग्रता में ग्रहण करके उसे चित्रित किया। आधुनिक हिंदी काव्य में वैष्णव उदारता के वे प्रतिनिधि हैं।

हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में प्रबंध काव्य सबसे अधिक गुप्त जी ने ही लिखे हैं। उनकी वास्तविक काव्य प्रतिभा प्रबंध काव्यों में दिखाई पड़ती है। ये प्रबंध काव्य अधिकांशतः पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानक पर आधारित हैं। इन प्रबंध काव्यों की मूल संवेदना आधुनिक है, इसमें अतीत को नए भाव बोध के अनुसार व्याख्यायित किया गया है। गुप्त जी ने धार्मिक विश्वासों को आहत किए बिना धर्म के भाव पक्ष को नए बोध से युक्त कर दिया।

गुप्त जी के प्रसिद्ध प्रबंध काव्य इस प्रकार हैं - साकेत, यशोधरा, विकट भट, रंग में भंग, गुरुकुल, किसान, सिद्धराज, प्लासी का युद्ध, जयद्रथवध, पंचवटी, जयभारत, जयिनी - ।

गुप्त जी की कृतियों में आधुनिक युग की लोकोन्मुखता मानवीय करुणा के साथ घुलमिल गई है। उन पर गाँधीवाद का प्रभाव स्पष्ट है। वे अतीत के प्रेमी हैं परन्तु वर्तमान की विषमताओं से कतराते नहीं। वे नए विचारों का स्वागत खुले मन से करते हैं। उनका अतीत प्रेम भविष्योन्मुख है -

"संदेश नहीं मैं यहां स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया" (साकेत)

वे मानवतावादी रचनाकार हैं।

राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?
तब मैं निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करे।

गुप्त जी की कृतियों में पारिवारिकता केंद्रीय संवेदना के रूप में उभरती है। इसी से संबद्ध गुप्त जी की नारी भावना है। नारी भावना के चित्रण में वे बेजोड़ हैं।

पं० रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है - गुप्त जी की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की क्षमता। इस दृष्टि से हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निःसंदेह कहे जा सकते हैं। भारतेन्दु के समय से स्वदेश-प्रेम की भावना जिस रूप में चली आ रही थी उसका विकास 'भारत भारती' में मिलता है। सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानों और श्रमजीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान सबकी झलक यहाँ पाते हैं।

→ हरिगीतिका इनका प्रियछंद है।

→ मेघनाद-वध (मधुसूदन दत्त) का अनुवाद अतुकांत कविता में किया। बाद में यह छंद प्रवृत्ति प्रसाद और निराला में विकसित हुई।